सत्यमेव जयते

अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA

नई दिल्ली
7 दिसम्बर, 2010

माननीय श्री आदित्य शास्त्री,

मुझे प्रख्यात् शिक्षाविद्, अर्थशास्त्री एवं वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली के स्वनामधन्य अध्यक्ष प्रोफेसर दिवाकर शास्त्री के दुखद देहावसान के समाचार से मर्मान्तक पीड़ा हुई है । मध्य प्रदेश के एक गाँव में 9 जनवरी, 1932 को जन्मे प्रोफेसर शास्त्री प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पं.हीरालाल शास्त्री के वरेण्य सपूत थे । उनके कार्यभार सम्भालने के बाद विश्वविद्यालय न केवल वित्तीय दृष्टि से स्वयंपूर्ण हुआ, वरण वह एक विश्वविख्यात् शिक्षण संस्था के रूप में प्रतिष्ठित हुआ । वे प्राचीन भारतीय शिक्षा परम्परा और बापू की स्वदेशी और खादी के अर्थशास्त्र के मर्मी और प्रबल समर्थक थे और उन्होंने परम्परागत भारतीय जीवन मूल्यों और उच्चादर्शों के साथ खादी के उपयोग को आजीवन प्रोत्साहित किया तथा विश्वविद्यालय में भारतीय संस्कृति सम्बन्धी कई नये पाठ्यक्रम शुरू किये । वे जीवन में सादगी और उच्चादर्शों के मूर्त्त प्रतिमान थे । नारी शिक्षा के मामले में उनके महाप्रयत्न के फलस्वरूप वनस्थली ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभायी और उसका देशव्यापी विस्तार हुआ ।

मैं आज विशेष रूप से यह याद कर विह्वल हो उठी हूँ कि मैं उसी महान् गुरुकुल की पूर्व छात्रा रही हूँ और मुझे प्रोफेसर शास्त्री के स्नेहिल सान्निध्य में रहने का गौरव प्राप्त रहा है । अतः यह मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति है, दुखदायी है ।

मैं हृदय से कामना करती हूँ कि ईश्वर दिवंगत आत्मा को स्वर्ग में शान्ति प्रदान करें और शोक-सन्तप्त परिवार को इस दुस्सह आघात को सहने की शक्ति और धैर्य प्रदान करें

शुभेच्छु

मीरा कुमार

मीरा कुमार (श्रीमती)

श्री आदित्य शास्त्री,
कुलपति, वनस्थली विश्वविद्यालय,
पोस्ट-वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान